ब्रह्माबाबा - चुम्बकीय व्यक्तित्व

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

ब्रह्मा बाबा की प्रतिभा बहुमुखी थी। उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलू यह था कि कोई बच्चा हो या बूढ़ा, धनवान हो या निर्धन, विद्वान हो या अशिक्षित, जल्दी ही उनकी निकटता का अनुभव करता था। हरेक को ऐसा अनुभव होता था कि बाबा के मुखारविन्द से जो शब्द विनिमृत हो रहे हैं, वे आत्मीयता और अपनत्व को लिए हुए हैं। उनमें औपचारिकता कम है परंतु शिष्टता-युक्त स्नेह अधिक। कितना भी कोई कमर कस कर उनके पास आता, वह उनके स्नेह से घायल हुए बिना न लौटता। वह बाबा से दोबारा अथवा बार-बार मिलने की इच्छा मन में लेकर जाता। बाबा का प्यार पत्थर को भी पिघला कर पानी बना देता और तप्त का ताप बुझाकर उसे शांति और शीतलता प्रदान करता, उनके पास बैठकर, उनसे मिलकर, उनके वचन सुनकर ऐसा लगता कि इस बेगाने संसार में हमने यहाँ ही अपनापन पाया है। एक यही जगह है जहाँ कृत्रिमता नहीं बल्कि वास्तविकता है और जिसके वचन हम सुन रहे हैं, उसके मन में एक ऐसा प्यार और दुलार है जो इस विशाल संसार में ढूंढ़ने पर भी अन्य कहीं नहीं मिल सकता।

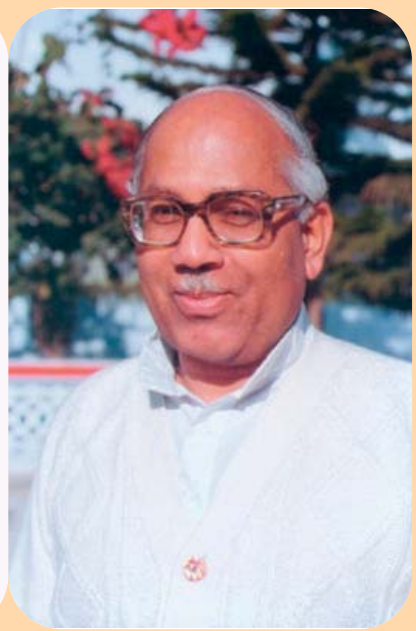

बाबा से मिलने पर उनका प्यार सबके मन में इतना गहरा उतर जाता कि उसकी गहराई समुद्र से भी अधिक, और उसकी छाप एक अमिट स्याही के ठप्पे की छाप से भी अधिक अमिट बन जाती। उनके वचन एक ऐसा प्रसाद का रूप थे जो सचमुच मन की चंचलता को हर लेते और आत्मा में मिठास भर देते। इसी प्रसंग में दिल्ली के एक व्यक्ति के वृत्तांत का उल्लेख करना समुचित होगा। वह बाबा का कट्टर विरोधी था। उसका कारण यह था कि उसकी धर्मपत्नी ईश्वरीय सेवाकेन्द्र में आती थी और वह उस सपत्नीक जीवन में भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने में सुदृढ़ थी। वह व्यक्ति समझता था कि बाबा ने उससे कुछ छीन लिया है और उसको भोग-सुख से वंचित किया है। अत: उसके मन में बाबा के प्रति घृणा, वैर, द्वेष और रुष्ट भाव था। एक बार जब बाबा दिल्ली में आये तो उसे मालूम हुआ कि जिस ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर उसकी धर्मपत्नी जाती है, वहाँ से एक बस प्रात: 4.00-4.30 बजे क्लास के भाई-बहनों को लेकर वहाँ क्लास के लिए जाती है, जहाँ बाबा ठहरे हुए हैं। एक दिन यह सोचकर कि वह भी उस बस के द्वारा वहाँ पहुँचकर बाबा से झगड़ा करेगा। प्रात: ही अपनी धर्मपत्नी के पीछे-पीछे आते हुए, धर्मपत्नी के मना करने पर भी केन्द्र पर पहुँचकर उस बस में बैठ गया। जिन लोगों को उसके व्यवहार और उसकी मानसिक अवस्था का पता था, वे सब सोचने लगे कि इसे साथ ले जायेंगे तो यह वहाँ जाकर झगड़ा करेगा। अत: नम्रता पूर्वक सम्मान देते हुए यह आवेदन किया गया कि बाबा से मिलने के लिए कोई समय निश्चित किया जाएगा और तब वह वहाँ जाए तो अच्छा होगा। परंतु वह कहाँ इस बात को मानने वाला था? उसने तो मन में झगड़े की ठान रखी थी। आयोजकों ने सोचा कि वहाँ पहुँचकर बस को थोड़ा पहले रोककर या तो दूर से ही इसे माइक से सुनने देंगे या इसे बहुत पीछे बिठायेंगे और क्लास समाप्त होते ही इसे बस में साथ ले आयेंगे।

वह वहाँ क्लास के अंत में जाकर बैठा परंतु बैठने के बाद वहाँ से हिला नहीं। क्लास के सारा समय उसने गर्दन भी नहीं हिलाई। आँखें भी शायद ही झपकी हों। वह बाबा को एकटक होकर देखता ही रहा और सुनते-सुनते मंत्रमुग्ध हो गया। क्लास के बाद जब उसे उठने के लिए कहा गया तब वह उठता ही नहीं था। उसकी आँखें इतनी गीली थी कि आँसू टपकने को आ रहे थे। बाबा से लड़ने की बजाय वह अपनी पत्नी को उलाहना देने लगा। वह बोला, बाबा तो

अस्सी साल का जवान है! कितना खूबसूरत है बाबा! कैसे सीधे बैठते हैं! तू अब तक पवित्रता की ही बात मुझसे कहती रही और ऐसे बाबा के बारे में तो कुछ बताया ही नहीं। मैं बाबा से मिलकर आऊँगा। वह टोली लेने के लिए बाबा की ओर बढ़ा, बाबा ने उसे पुचकारते और मुस्कुराते हुए टोली दी और वह ऐसा खुश हो गया कि उसे भी अपना बाबा मिल गया।

बाबा ज्ञान-बिन्दुओं को जिस रीति से स्पष्ट करते, वह रीति भी विचित्र थी और सम्पूर्णता की ओर ले जाने वाली थी। वे ईश्वरीय ज्ञान के किसी भी सिद्धांत को सूक्ष्मता की सीमा तक ले जाते। उदाहरण के तौर पर, साहित्य-लेखन के कार्य में लगे होने के कारण मैं जब कभी उनके पास कोई लिखित निबंध अथवा लेख ले जाता तो उसमें शब्दों के साथ कई विशेषण जोड़ देते जिससे पाठक को तत्संबंधी तथ्य अधिकाधिक स्पष्ट होते जाते। गोया पाठक को 'ज्ञान' ही नहीं, 'विशेष ज्ञान' प्राप्त होता। एक बार की बात है कि जो लिखित सामग्री मैं बाबा के पास ले गया, उसमें वर्तमान सृष्टि को कलियुगी सृष्टि कहा गया था जो कि ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार ठीक ही था। बाबा ने कहा कि कलियुगी शब्द से पहले धर्म-ग्लानि युक्त, सत्यता-रहित शब्द जोड़ो। जब मैं ये विशेषण जोड़कर तथा अन्य संशोधन करके बाबा के पास लेख को पुन: ले गया, तब बाबा ने कहा कि इसमें कुछ और विशेषण जोड़ने चाहिए और तीसरी बार कुछ और विशेषण जोड़ने को कहा। अंत में कलियुगी शब्द से पहले तमोप्रधान, भ्रष्टाचारी, पतित, आसुरी, मर्यादाहीन, हिंसा-प्रधान आदि-आदि शब्द भी जुड़े हुए थे। इसके बाद भी बाबा ने कहा कि 100 प्रतिशत और दिवालिया शब्द इसमें और जोड़ दो।

इसी प्रकार एक बार जब यह सुभाषित (सुवाक्य) लिखा गया कि ''पवित्रता, सुख और शांति आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है'' तब बाबा ने कहा कि इससे पहले 100 प्रतिशत या सम्पूर्ण शब्द जोड़ो और यह लिखो कि '21 जन्मों के लिए' जन्मसिद्ध अधिकार है। यह लिखने के बाद फिर बाबा ने कहा कि प्रश्न उठता है कि ईश्वरीय जन्म कब होता है और यह अधिकार कब मिलता है? यह बात समझाते हुए उन्होंने इस सुवाक्य में ''अब नहीं तो कभी नहीं'' शब्द जोड़ने का निर्देश दिया।

ज्ञान को सम्पूर्णता से समझने और समझाने के ये प्रयत्न बाबा केवल लिखित सामग्री ही के द्वारा नहीं करते थे बल्कि जब कहीं सम्मेलन या प्रवचन आदि होता, उसमें भी बाबा तीन प्रकार की सम्पूर्णता की ओर ले जाने का सदा विशेष प्रयास कराते रहते। एक तो बाबा इस ओर ध्यान खिंचवाते कि वक्ता की अपनी स्थिति पवित्र और योग-युक्त होनी चाहिए। इसे वे यों समझाते कि जैसे तलवार का जौहर होना ज़रूरी है, ऐसे ही पवित्रता और योग-युक्त स्थिति ज्ञान-रूपी तलवार का जौहर है। दूसरा वे इस ओर ध्यान खिंचवाते कि प्रवचन में कौन-कौन सी बात बताना ज़रूरी है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए वे समझाते कि जैसे कोई अच्छा वकील ऐसा नुक्ता बता देता है कि जिससे बात जज की समझ में आ जाती है और जो जज पहले फाँसी की सजा देने की बात सोच रहा था, वह अब अपराधी को मुक्त करने का निर्णय करता है। वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति को भी ऐसी-ऐसी बात सुनानी चाहिए कि पापी, पतित या अपराधी व्यक्ति की बुद्धि में वह ऐसी बैठ जाए कि पहले जहाँ वह भोग-विलास के जीवन की ओर प्रवृत्त था अब वह उससे मुक्त होने की बात का निर्णय करता है। बाबा कहते कि वकील को अगर समय पर प्वाइंट याद नहीं आयेगी और वे जज के आगे कुछ नहीं रखेगा तो अपराधी अपना मुकदमा हार जाएगा और दण्ड का भागी होगा। यहाँ तक कि हो सकता है, उसे मृत्युदण्ड भी भोगना पड़े। गोया वकील की छोटी-सी गफलत से कितना नुकसान हो सकता है। इसी प्रकार ज्ञानवान प्रवक्ता अगर भाषण के समय आवश्यक बातें कहना भूल जाता है तो सुनने वाले लोग विषय-विकारों में गोता लगाए दु:ख-दंड के भागी बनते रहते हैं। तीसरा, वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते कि बात समझाने की विधि क्या हो। केवल बात ही ज़रूरी नहीं होती, बात करने का तरीका भी महत्वपूर्ण होता है। बात कहना भी एक कला है। उस पर ध्यान देना, उसका अभ्यास करना, उसमें सम्पूर्णता लाना भी ज़रूरी है। इस बात को समझाते हुए वे कहते कि डॉक्टर जब किसी को टिंक्चर आयोडीन लगाता है तब वह उसे साथ-साथ सहलाता भी है, फूंक भी मारता है। जब कोई सर्जन किसी का ऑपरेशन करता है तो वह उसे क्लोरोफॉर्म सूंघाता है ताकि उसे दर्द न हो। जब कोई इंजेक्शन लगाता है, तब वह पहले सूई को उबलते पानी में डाल कर कीटाणु-रहित और संक्रमण-रहित करता है। इस प्रकार बाबा समझाते-दूसरों को सम्मान देते हुए तथा स्नेह और मर्यादा युक्त, शुभ और कल्याण की भावना से, अनुभव, निश्चय और ओज की भाषा से समझाना चाहिए, तब जाकर वह तीर ठिकाने पर लगता है। इस तरह बाबा में मैंने हमेशा नये-नये उमंग-उत्साह का संचार देखा।